दिल्ली की नई पहचान : योजना को भूकंप, हवा और बाढ़ से नहीं होगा खतरा

सिग्नेचर ब्रिज योजना ने पकड़ी रफ्तार

नई दिल्ली, जागरण संवाददाता : दिल्ली की नई पहचान के रूप में प्रचारित सिग्नेचर ब्रिज के निर्माण कार्य ने तेजी पकड़ ली है। अधिकारियों का कहना है कि नींव का 75 फीसदी कार्य मानसून से पहले पूरा कर लिया जाएगा। वहीं भूकंप के खतरे को देखते हुए योजना में कुछ बदलाव किया गया है। अत्याधुनिक तकनीक से इस पूरी योजना को भूकंपरोधी बनाने तथा बाढ़ व हवा के दबाव से बचाने के लिए इस पूरी योजना की समीक्षा की गई और तकनीकी विशेषज्ञों की राय ली गई है। जिसमें योजना के ऊंचे पिलर के डिजाइन में परिवर्तन मुख्य रूप से शामिल है। जिसपर पुणे, रुड़की व जर्मनी के विशेषज्ञों ने काम किया है। योजना में इस बात पर जोर दिया गया है कि अभी तक आए भूकंप के झटकों की तीव्रता से सवा गुना अधिक तीव्रता के झटके आने पर भी इसका कुछ न बिगड़े। विभाग का कहना है कि योजना 2013 तक पूरी होगी। योजना पर 1131 करोड़ की राशि खर्च की जाएगी।

दिल्ली भूकंप की दृष्टि से जोन चार में आता है। यमुना की तलहटी इसका केंद्र है। ऐसे में यमुना में निर्माण को लेकर भी मनाही होती रही है। विशेषज्ञ कहते हैं कि यमुना में या यमुना खादर में किसी तरह का निर्माण उचित नहीं है। इस सब मामलों को देखते हुए यमुना पर वजीराबाद में बनाए जा रहे अलग तरह के पुल सिग्नेचर ब्रिज को सुरक्षित बनाने के लिए और अधिक काम किया गया है। योजना का अधिकतर निर्माण यमुना की धारा के बीच होना है। जो कि एक चुनौती है। विभागीय सूत्रों का कहना है कि पूरी योजना चार साल पहले ही तैयार हो चुकी थी। मगर तीन साल पहले भूकंप, बाढ़ व ऊंचे पिलर को तेज हवा से खतरे को देखते हुए योजना की समीक्षा शुरू की गई जो अब पूरी हो चुकी है। इसके अनुसार योजना पर काम कर रही तीनों कंपनियों के संयुक्त उपक्रम ने काम कराया है। इस उपक्रम में भारत की गैमन, ब्राजील की कंस्त्रूतोरासिदादे व इटली की टैसाचाई कंपनियां शामिल हैं। तारों से पुल बनाने में दोनों विदेशी कंपनी विश्व की मानी हुई कंपनी बताई जा रही हैं। संयुक्त उपक्रम ने भूकंप के खतरे को देखते हुए आइआइटी रुड़की से विस्तृत अध्ययन कराया है। जिसमें यह सिद्ध किया गया है कि अभी तक आ चुके भूकंप के झटकों से सवा गुना अधिक तीव्रता से भूकंप आता है तो भी योजना का कुछ नहीं बिगड़ेगा। आपको बता दें कि योजना का मुख्य आकर्षण वह 150 मीटर ऊंचा पिलर होगा, जिस पर 675 मीटर लंबे पुल का का होगा। इस पिलर से 19 मोटे तारों से पुल का डेक थामा जाएगा। विशेषज्ञों का कहना है कि पुल से वाहन गुजरेंगे तो पिलर हल्का से कंपन करेगा।

ऐसे में पिलर की मजबूती का मामला और बढ़ जाता है। चूंकि यह पूरा इलाका भूकंप की दृष्टि से खतरनाक माना जाता है। ऐसे में योजना में पूरे बंदोबस्त किए गए हैं। इसी प्रकार बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए पुणे के प्रतिष्ठित संस्थान से हाइड्रोलिक मॉडल स्टडी और हवा के झोंके से योजना को कैसे संरक्षित किया जाए इसके लिए जर्मनी से विंड टनल स्टडी कराई है। योजना के तहत मजनू का टीला एरिया को सिग्नल-फ्री किए जाने वाले क्षेत्र के फ्लाईओवर के पिलरों को पुल के डेक के बीच लगने वाली वायरिंग सिस्टम नहीं लगाया जाएगा। संयुक्त उपक्रम द्वारा तैयार जर्मनी की स्पाइस बरगरमैन कंपनी ने डिजाइन तैयार किया है। इसकी भी जांच फ्रांस की कंपनी सैस्त्रा से कराई गई है। बहरहाल योजना पर काम शुरू हो चुका है।

डीटीटीडीसी के अधिकारियों का कहना है कि अगले मानसून तक मुख्य योजना की नींव का काम पूरा हो जाएगा। आपको बता दें कि इस पूरी योजना के लिए दिल्ली सरकार ने 1131 करोड़ का बजट पास किया है। जिसमें से 631 करोड़ सिग्नेचर ब्रिज के मूल पुल के लिए खर्च होगा। 349 करोड़ आसपास के एरिया को सिग्नल फ्री करने और अप्रोच रोड बनाने तथा 150 करोड़ के करीब सर्विसेज सिफ्टिंग पर खर्च होगा। इस पूरी योजना का मुख्य आकर्षण वह स्टील का टावर होगा जिसकी ऊंचाई कुतुबमीनार से दो गुना से भी अधिक होगी। टावर पर 150 मीटर उंचाई तक लिफ्ट से पहुंचा जाएगा। पहले पुल की लंबाई छह सौ मीटर निर्धारित की गई थी मगर अब इसकी लंबाई 675 मीटर कर दी गई थी तथा चौड़ाई 32 मीटर से बढ़ाकर 35 मीटर के करीब कर दी गई। पुल के टावर में भी बदलाव किया गया था। जो काम पहले कंकरीट का निर्धारित किया गया था उसे स्टील आधारित किए जाने का फैसला लिया गया है।

सिगनेचर ब्रिज के लिए यमुना मे बन रहे पिलर।

महत्वपूर्ण योजना

- मानसून से पहले हो जाएगा नींव का 75 फीसदी कार्य